Sandhya Singh

Attitude Towards Learning Hindi in Singapore Universities: A Study

संध्या सिंह

सिंगापुर के विश्वविद्यालयों में हिंदी सीखने का रुझान: एक अध्ययन

Abstract Hindi is taught as a foreign language in two Singaporean universities. This reflects the interest in India and South Asia, which has increased in universities and the academic world over the last two-three decades. This interest has stemmed from India's growth especially in the rise of the purchasing power of her growing middle class. There are also various untouched opportunities in India. In Singapore, the students who take Hindi are diverse. Some students are second/third generations Indians. Native Singaporean ethnic Chinese and Malays also do take up the course. The motivations for doing so range from a desire to understand Bollywood films without subtitles to gaining a marketable skill set.

This paper seeks to explain this phenomenon by understanding the broad mechanisms and reasons behind the uptake of Hindi as a subject. The variation amongst students in terms of linguistic and cultural differences is analysed as a variable influencing their motivation to learn Hindi. Both primary and secondary data are utilized in doing so, ranging from existing literature reviews to interviews and surveys.

Keywords Indian diaspora, Hindi teaching in foreign countries, Hindi learning, culture, script.

सारांश सिंगापुर के दो विश्वविद्यालयों में हिंदी विदेशी भाषा के रूप में सिखाई जा रही है और कहीं न कहीं यह रुचि भारत और दक्षिण एशिया के प्रति उस रुझान का प्रतिबिंब है, जिसका प्रचलन विश्व भर के विश्वविद्यालयों और अकादमिक संसार में पिछले दो-तीन दशकों में बढ़ा है। भारत को एक उदय होती शक्ति के रूप में देखा जा रहा है और बाज़ारीकरण के इस युग में हिन्दुस्तान व हिन्दुस्तानियों के प्रभुत्व को नहीं नकारा जा सकता है। इन विश्वविद्यालयों में हिंदी लेने वाले कुछ दूसरी या तीसरी पीढ़ी के भारतीय भी होते हैं पर, एक बहुत बड़ा वर्ग बॉलीवुड प्रेमियों का भी है। साथ ही भारत की उभरती अर्थ-व्यवस्था, भारत की आर्थिक वृद्धि को भी रोज़गार या व्यापार की संभावनाओं के रूप में देखा जा रहा है।

Published in: Tatiana Oranskaia, Anvita Abbi (eds.): *The Heart of Change. Issues on Variation in Hindi.* Heidelberg: HASP, 2022.
DOI: https://doi.org/10.11588/hasp.919.c12627

अत: इस लेख में सिंगापुर के विश्वविद्यालयों में हिंदी सीखने वाले छात्रों के भिन्न पक्षों का विश्लेषण एवं हिंदी के प्रति उनके रुझान पर टिपण्णी की गई है। एक ओर जहाँ हिंदी सीखने वाले छात्रों के बीच भाषाई सांस्कृतिक भिन्नता है वहीं दूसरी ओर हिंदी पढ़ने की उनकी प्रेरणा में भिन्नता के बीच संबंध “परिवर्तनशीलता” का रूप है। साथ ही बहुत ही संक्षेप में हिंदी अध्यापन के कुछ पहलू रखे गए हैं। इस शोध के लिए प्राइमरी और सेकेंडरी दोनों तरह के आंकड़ों का इस्तेमाल किया गया है। साहित्य समीक्षा, साक्षात्कार, सर्वेक्षण, भिन्न हिंदी विभागों से बातचीत, व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी का अध्ययन, संवादात्मक समारोहों का अवलोकन, समीक्षा, आदि माध्यमों का सहारा लिया गया है।

मुख्य शब्द – भारतीय डायस्पोरा, विदेशों में हिंदी शिक्षण, हिंदी सीखना, संस्कृति व लिपि।

१ परिचय

सिंगापुर को स्वतन्त्र राष्ट्र की संज्ञा सन् १९६५ में मिली। सन् १९५९ में सिंगापुर ब्रितानी साम्राज्य के अधीन एक स्वतंत्र राज्य बन गया था। कुआलालम्पुर सरकार के साथ बढ़ते मतभेद को शान्त करने के लिए सिंगापुर ने संपूर्ण स्वराज्य की ओर कदम बढ़ाया और ९ अगस्त १९६५ को पूर्ण स्वराज्य हासिल कर लिया (Chew & Lee 1991)।

सिंगापुर कुल ७१६.१ वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ क्षेत्र है। जातीयता में अनोखापन सिंगापुर की एक महत्वपूर्ण ख़ूबी है। सिंगापुर में कई धर्मों में विश्वास रखने वाले, विभिन्न देशों की संस्कृति, इतिहास तथा भाषा के लोग रहते हैं। मलय प्रायद्वीप होने के कारण मलय लोगों को यहाँ का मूल निवासी कहा जाता है लेकिन अब जनसंख्या में उनका प्रतिशत काफ़ी कम है। २०१८ की जनसंख्या रिपोर्ट के मुताबिक़ सिंगापुर में सन् २०१८ की जनगणना के आधार पर ७४.३% चीनी, १३.४% मलय,९.१% भारतीय और ३.२% मिश्रित जातियाँ हैं (Department of Statistics 2018)।

सन् १९६५ में सिंगापुर को जब पूर्ण स्वराज मिला तो कई चुनौतियाँ थीं; रोज़गार, आवास आदि पर एक चुनौती थी यहाँ की बहुसंस्कृति को बनाए रखना। इसी बहुसांस्कृतिक समाज के निर्माण ने बहुभाषिता को बढ़ावा दिया। सिंगापुर में अंग्रेज़ी, चीनी, मलय और तमिल चार भाषाओं को आधिकारिक भाषा का दर्ज़ा मिला था अत: अंग्रेज़ी को मुख्य भाषा तथा अन्य तीन को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाने की शुरुआत हुई।

इस शोध में सिंगापुर की द्विभाषी नीति नहीं बल्कि दो मुख्य विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा को अपने पाठ्यक्रम में ऐच्छिक रूप से चुनने के कारणों, उनकी प्रेरणा और संबंध पर चर्चा की गई है। एक ओर जहाँ हिंदी सीखने वाले छात्रों के बीच भाषाई सांस्कृतिक भिन्नता है वहीं दूसरी ओर हिंदी पढ़ने की उनकी प्रेरणा में भिन्नता के बीच संबंध ‘परिवर्तनशीलता’ का रूप है।

२ सिंगापुर के विश्वविद्यालयों में हिंदी

सिंगापुर में वैसे तो स्थानीय विद्यालयों में भी हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाया जा रहा है पर इस शोध पत्र में सिर्फ विश्वविद्यालयों में हिंदी को विदेशी भाषा के रूप में सिखाने के पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। सिंगापुर के दो मुख्य विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा शिक्षण कार्यक्रम संचालित होता है; नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर (एन यू एस) और नान्यांग टेक्नोलाजिकल यूनिवर्सिटी

(एन टी यू)। ये दोनों विश्वविद्यालय एशिया में ही नहीं विश्व में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर (एन यू एस) में हिंदी भाषा शिक्षण की शुरुआत सन् २००८ में हुई। नान्यांग टेक्नोलाजिकल यूनिवर्सिटी (एन टी यू) की बात करें तो हिंदी भाषा शिक्षण सन् २०१४ से हो रहा है।

एन यू एस में हिंदी कला और सामाजिक विज्ञान संकाय की शाखा 'सेंटर फ़ॉर लैंग्वेजेज़ स्टडीज़' के अंतर्गत 'माईनर' और ऐच्छिक रूप में सिखाई जाती है। हिंदी के छह स्तर हैं जिन्हें प्राथमिक, मध्यम और उच्च तीन श्रेणियों में बाँटा गया है। ये छह स्तर विद्यार्थी छह सत्रों में पूरा करते हैं। यहाँ भारतीय भाषाओं में हिंदी के अलावा तमिल भाषा भी सिखाई जाती है पर वह सिर्फ ऐच्छिक रूप में ही उपलब्ध है क्योंकि कम रुचि के कारण सिर्फ प्राथमिक स्तर की कक्षाएँ ही चलाई जाती हैं।

एन टी यू में हिंदी मानविकी, कला और सामाजिक विज्ञान संकाय की शाखा ' सेंटर फॉर मोर्डन लैंग्वेजेज़' के अंतर्गत ऐच्छिक विषय के रूप में सिखाई जाती है। एन टी यू हिंदी के दो स्तर हैं पर २०१४ से २०२० तक सिर्फ पहले स्तर की कक्षाएँ ही चलाई गई हैं जिसका कारण हिंदी के अगले स्तर में विद्यार्थियों की कम रुचि है। भारतीय भाषाओं में हिंदी के अलावा एन टी यू में भी तमिल भाषा की कक्षाएँ चलाई जाती हैं।

इस पत्र में कुछ ख़ास पहलुओं को ही उठाया गया है; सिंगापुर के विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ने वाले छात्र आखिर हैं कौन? उनकी पृष्ठभूमि क्या है? क्या यहाँ भी अमरीका और यूरोपीय देशों की तरह 'हेरिटेज लर्नर' हैं? कक्षाओं में अलग छात्रों की पृष्भूमि का अनुपात क्या है? जैसा कि ज़्यादातर लोग जानते हैं कि सिंगापुर की जनसंख्या में मलय, चीनी, भारतीय और अन्य जिसमें यूरेशियन आदि मुख्य हैं, चार जातियों में विभाजित वर्ग हैं तो इस भिन्न पृष्ठभूमि का कोई अलग प्रभाव है? संक्षेप में यह भी चर्चा की गई है कि हिंदी शिक्षण के लिए किस प्रकार की सामग्री का इस्तेमाल किया जाता है और उसका भाषा सीखने में क्या प्रभाव दिखाई देता है?

३ हिंदी सीखने वाले: जातीय परिप्रेक्ष्य

इस विश्लेष्ण के लिए कुछ आँकड़े दो वर्षों के भीतर इकट्ठे किये गए। इन आँकड़ों में मुख्य रूप से प्रश्नावली और छात्रों के विचार सम्मिलित हैं। छात्रों द्वारा की गई टिप्पणी भी शिक्षण सामग्री में इस्तेमाल की गई है। निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए मुख्य रूप से एकत्रित आँकड़ों का विश्लेष्ण करने की आवश्यकता है इसलिए पहले कुछ आँकड़े देखते हैं ताकि यह अनुमान लगाया जा सके कि यहाँ कक्षाओं में किस पृष्ठभूमि से छात्र अधिक हैं , क्या इसका कोई ख़ास कारण है और कोई प्रभाव शिक्षण तकनीक पर है?

इस विश्लेष्ण के लिए काफी बारीकी से निरीक्षण, तुलना और सारांश, समेकन आदि किया गया है जिसकी अनुशंसा क्रेस्वाल और सिल्वरमैन ने भी की है। (Creswell 2002; Silverman 2001) हालाँकि सिर्फ़ तीन सत्रों का सहारा लिया जा रहा है पर ज़्यादातर रुझान इसी प्रकार का होता है। यद्यपि यहाँ कुछ संख्या दी गई है फिर भी उसे लगभग के रूप में ही प्रयोग किया जाएगा क्योंकि कई बार पाठ्यक्रम के बीच में कुछ छात्र जुड़ते या छोड़ देते हैं।

निम्न रेखाचित्र १ और रेखाचित्र २ के माध्यम से अलग जातीय पृष्ठभूमि वाले छात्रों की संख्या स्पष्ट की गई है ।

इन दोनों आँकड़ों के अध्ययन से यह तो स्पष्ट है कि दोनों ही विश्वविद्यालयों में भारतीय छात्रों की संख्या अधिक है पर विश्वविद्यालय २ में मलय छात्रों की संख्या भी काफ़ी है। सिंगापुर की

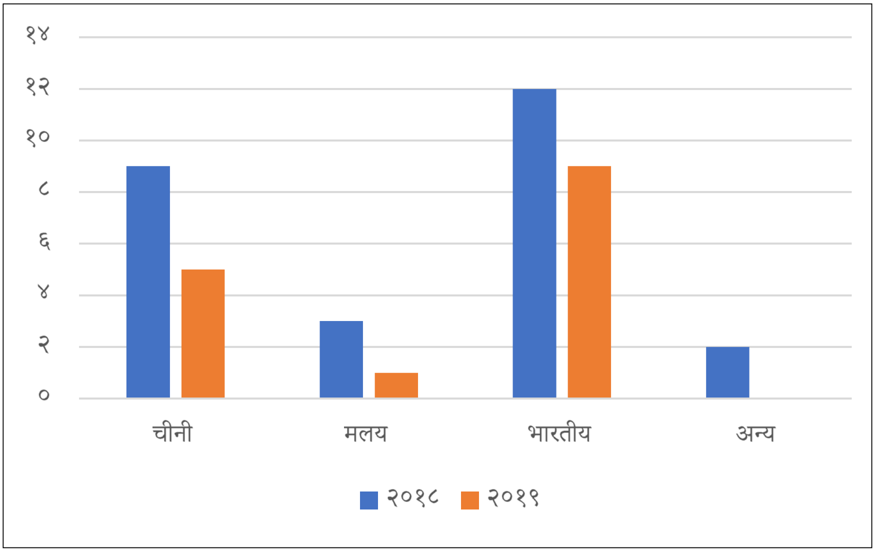

रेखाचित्र १ विश्वविद्यालय १– अलग जातीय पृष्ठभूमि वाले छात्र

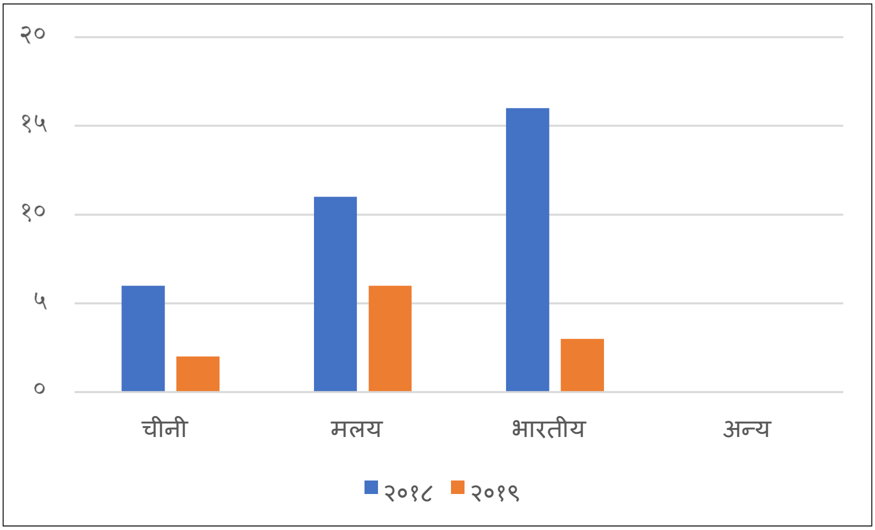

रेखाचित्र २ विश्वविद्यालय २– अलग जातीय पृष्ठभूमि वाले छात्र

जनसंख्या में चीनी प्रतिशत अधिक है लेकिन हिंदी कक्षाओं की ओर उनका रुझान कम है, आखिर इसके क्या कारण हैं? इन कारणों पर भी चर्चा यहाँ की गई है।

सिंगापुर के दोनों ही विश्वविद्यालयों में अन्य भाषाओं की तुलना में हिंदी सीखने वालों की संख्या कम है। यूरोपीय भाषाएँ और जापानी, चीनी, कोरियाई, बहासा इंडोनेसिया जैसी भाषाएँ बहुत लोकप्रिय हैं। आखिर ऐसा क्या है जो हिंदी सीखने को प्रोत्साहित नहीं करता।

३.१ हिंदी सीखने वाले मलय छात्र

मलय छात्रों की संख्या भी कहीं कम तो कहीं अधिक है। जब मलय छात्रों से सवाल पूछे गए कि क्या वे हिंदी भाषा सीखना चाहते हैं और क्यों? उनका उत्तर स्पष्ट था कि वे आज भी बॉलीवुड के दीवाने हैं और इस फ़िल्मी प्रेम ने ही हिंदी भाषा की ओर उनको खींचा है। हालाँकि फिल्मों में 'सबटाइटल' होते हैं लेकिन वो मज़ा नहीं आता है जब तक कि कुछ बातें समझ न आएँ। अब बॉलीवुड के साथ ही अरब संस्कृति का बोलबाला इन मलय छात्रों में अधिक बढ़ा है। वे अरबी भाषा सीखने को ज़्यादा महत्त्व देने लगे हैं। चूँकि मलय भाषा की लिपि रोमन ही है तो उन्हें अरबी लिपि सीखने में अधिक उत्साह नज़र आता है।

यह भी सत्य है कि ज़्यादातर मलय छात्र धार्मिक कक्षाओं में अरबी भाषा के संपर्क में आते हैं और जब विश्वविद्यालय में उन्हें पुन: अरबी सीखने का मौक़ा मिलता है तो उसे पाना चाहते हैं। और इस फ़ेहरिस्त में हिंदी के प्रति आकर्षण ढीला पड़ जाता है। कुछ छात्रों के अनुसार –

> *“अब शाहरुख खान, सलमान खान और आमिर खान का ज़माना भी ख़त्म हो रहा है तो हिंदी सीखने का शौक भी कम पड़ रहा है। कोई उनके जैसा चाहिए जो हमें फिर से हिंदी की ओर ले चले।”*

३.२ हिंदी सीखने वाले चीनी छात्र

अब बात आती है चीनी छात्रों की संख्या की। हिंदी कक्षाओं में चीनी छात्रों की संख्या काफ़ी कम रहती है। चीनी भाषा में भी लिपि सीखनी होती है और हिंदी में भी। तो कुछ छात्र कहते हैं –

> *“हम ऐसी भाषा सीखना चाहते हैं जिसमें लिपि न सीखनी पड़े। लिपि सीखने में काफ़ी समय चला जाता है और बोलना, बातचीत करना बहुत नहीं सीखा जा सकता। इसलिए मैं हिंदी नहीं सीखना चाहता था लेकिन फिर सोचा चलो देखता हूँ। अब लगता है यह ग़लतफ़हमी है। असल में हिंदी लिपि सीखनी आसान है।”*

हिंदी के कम लोकप्रिय होने का दूसरा कारण सिंगापुर में भारत की भाषा तमिल का सरकारी कामकाज की एक भाषा होना है। यहाँ के चीनी छात्रों को और जो छात्र बाहर के विश्वविद्यालयों से आते हैं, उन्हें तमिल सीखना बेहतर विकल्प लगता है। उनका तर्क है कि अगर भारत की कोई भाषा सीखनी है तो तमिल सीखनी चाहिए क्योंकि तमिल यहाँ प्रयोग कर सकते हैं। भारत कहाँ जाना है कि हिंदी का इस्तेमाल करेंगे।

हालाँकि तमिल सीखने वालों की संख्या भी अधिक नहीं है। यह कहीं न कहीं भारत के प्रति विकसित एक सोच का नतीजा भी है। सिंगापुर में भारत से शुरुआती दौर यानी १९४०–५० में मज़दूर वर्ग ही अधिक आया और बाद के वर्षों में भी कम पढ़े-लिखे लोगों का आगमन कई छोटे कार्यों के लिए भी रहा। इस शुरुआती सामाजिक ढाँचे ने भारत और भारतीयों के प्रति बहुत सकारात्मक सोच नहीं पनपने दी जिसका कुछ असर आज तक दिखाई देता है। यह भी एक कारण है भारतीय भाषाओं के प्रति कम रुचि का।

भारत बहुत सुन्दर देश है लेकिन वहाँ के दर्शनीय स्थल भी सिंगापुर के लोगों को उतना नहीं लुभा पाते जितना यूरोप और अन्य देशों के। जो छात्र हिंदी सीख रहे हैं उनमें से कई भारत जाना चाहते हैं या हिंदी भारत घूमने के लिए ही सीख रहे हैं लेकिन बड़ी संख्या को हिंदी कक्षाओं तक ले आ पाने में भारत का पर्यटन उद्योग अभी पीछे है।

३.३ हिंदी सीखने वाले अहिंदी भाषी भारतीय छात्र

अगर हम रेखाचित्र को देखें तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि हिंदी सीखने वालों की संख्या अधिक नहीं है लेकिन उन छात्रों में भारतीय मूल के छात्रों की दोनों ही विश्वविद्यालयों में सबसे बड़ी संख्या है। आखिर भारतीय क्यों हिंदी सीखना चाहते हैं? क्या ये भी यूरोप और अमरीका की तरह हेरिटेज लर्नर हैं? सिंगापुर के दोनों ही विश्वविद्यालयों में हिंदी को सिर्फ विदेशी भाषा के रूप में ही सिखाया जाता है। यहाँ एक ही कक्षा में दो अलग तरह के छात्र न हों यही कोशिश की जाती है। अगर छात्र हिंदी ज्ञान छिपाकर कक्षा में बैठते हैं और इसका पता चल जाता है तो विश्वविद्यालय बहुत कड़ा रुख अपनाते हैं। तो आखिर ये भारतीय कौन हैं? सिंगापुर में भारतीयों में बहुत बड़ा समुदाय तमिल लोगों का है। भारत की तरह इन तमिल लोगों को हिंदी नहीं आती क्योंकि वे विद्यालय में तमिल दूसरी भाषा के रूप में पढ़ सकते हैं और हिंदी पढ़ने, सीखने का कोई कारण या ख़ास अवसर नहीं रहता। यही भारतीय हिंदी सीखने वालों में बड़ी संख्या बनाते हैं। इनमें से कई पूरी तरह से सिंगापुर में ही बसे हैं और कभी भारत जाना भी नहीं होता तो उनके लिए हिंदी ठीक वैसी ही है जैसी किसी विदेशी भाषी के लिए। वे बॉलीवुड फ़िल्में अवश्य देखते हैं पर उतना ही समझते हैं जितना कोई भी हिंदी भाषी तमिल फ़िल्म देखते समय समझेगा। भारतीय विरासत से जुड़े होने के कारण हिंदी न समझ पाने की कमी कहीं न कहीं खलती है। इसी कमी को पूरा करने के लिए अहिंदी भाषी भारतीय छात्र हिंदी सीखने आते हैं। हिंदी कक्षाओं में इनका अनुपात अधिक होता है क्योंकि दक्षिण भारत से तमिल, तेलगू, कन्नड़ कई भाषा-भाषी लम्बे समय से यहाँ हैं और हिंदी को आज भारत की प्रतिनिधि भाषा के रूप में सभी देख रहे हैं तो वे भी इस दौड़ में पीछे नहीं रहना चाहते। साथ ही सिंगापुर में हिंदी फ़िल्मों के प्रति दक्षिण भारतीय समुदाय में भी गहरी रुचि है जो उन्हें कई बार हिंदी सीखने को प्रेरित करती है। एक और कारण आजकल उत्तर भारतीयों की बढ़ती संख्या भी है।

इस भिन्न पृष्ठभूमि का शिक्षण पर किस तरह से असर होता है यहाँ यह भी जानना ठीक होगा। भारतीय पृष्ठभूमि वाले छात्रों को भारतीय संस्कृति से संबंधित काफी ज्ञान होता है तो ज़ाहिर है भाषा सीखने का सांस्कृतिक पक्ष उन्हें पहले से ज्ञात होता है, तो यह आसान बन जाती है। तमिल और हिंदी के कुछ स्वर समान हैं तो पहली कुछ कक्षाएँ उनके लिए आसान हो जाती हैं। हिंदी फ़िल्में भी चीनी छात्रों के मुक़ाबले वे ज़्यादा देखते हैं तो कुछ-कुछ शब्द भी जल्दी पकड़ लेते हैं। वैसे ये अलग बात है कि परीक्षा में चीनी छात्र कई बार अधिक अच्छा करते हैं।

रोमेन ने ५ तथ्य सुझाए हैं जो भाषा के बदलाव यानी भाषा सीखने के लिए प्रेरित करने में कहीं न कहीं महत्वपूर्ण कारक हैं (Romaine 1989: 42):

१. भाषा का दर्जा

२. मनोभाव या रवैया

३. विद्यालय की भूमिका व भाषानीति

४. घर पर भाषा संरक्षण न कर पाना

५. नई पीढ़ी द्वारा अपूर्ण शिक्षा

रोमेन के इन पाँच तथ्यों पर ध्यान देने से यह तो स्पष्ट है कि भारत में हिंदी को कामकाज आदि से जोड़कर इस्तेमाल करने की स्थिति जब तक और अधिक बेहतर नहीं होगी तो विदेशी भाषा के रूप में हिंदी सीखने वालों की संख्या में भी बढ़ोतरी नहीं होगी। हिंदी के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने की ज़रूरत है। भाषा को रोज़गार या देश की मुख्य धारा से जोड़े बिना उसके प्रति रवैये को बदला नहीं जा सकता। 'रोमेन' के चौथे व पाँचवें बिंदु पर अगर ध्यान दें तो अंग्रेज़ी के बढ़ते चलन व वर्चस्व ने भारत में हिंदी को प्रभावित किया है। आज भारत में ख़ासकर शहरों में लोग कई वाक्यों में अंग्रेज़ी शब्दों का समावेश कर ही देते हैं। भले ही हिंदी पढ़ रहे हैं पर भविष्य में उसकी उपयोगिता बातचीत से ज़्यादा कहीं नज़र नहीं आती। आज घरेलू भाषा का छात्रों के जीवन में कोई व्यावहारिक पहलू नहीं है। न तो स्थानीय न राष्ट्रीय स्तर पर इसका कोई मूल्य है। भाषा में विद्वत्ता हासिल करने पर भी कोई सामाजिक या नौकरी संबंधी लाभ दिखाई नहीं देता इसलिए भारत में हिंदी के प्रति रवैया जब ठीक नहीं है तो कोई विदेशी क्यों सीखना चाहेगा? छात्रों को तो यही लगता है कि अगर कभी भारत घूमने गए तो अंग्रेज़ी से काम चल जाएगा।

भाषा समय के साथ बदलती रहती है क्योंकि अपने साथ जोड़ने व त्यागने का भाव भाषा बड़ी आसानी से अपना लेती है। भाषा को बरकरार रखने के कई कारकों में से एक रिश्तेदारों से मिलने अपने देश जाना है। सिंगापुर में भी यह बात स्पष्ट होती है क्योंकि जिन भारतीय छात्रों से विचार लिए गए उनमें से ३० प्रतिशत पिछले पाँच वर्षों में कम से कम एक बार भारत अवश्य गए हैं। भारतीय होने के सूत्र की मजबूती भारत में अपने रिश्तेदारों से मिलकर ज़्यादा दृढ़ हो जाती है। उस समय हिंदी भाषा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि भले ही आज भारत विदेश हो गया हो, जहाँ अंग्रेज़ी का बोलबाला बढ़ गया है, पर दक्षिण में भी कई बार उन्हें हिंदी की थोड़ी बहुत ज़रूरत पड़ जाती है। दोरियन के अनुसार भाषा को बरकरार रखने के दो महत्वपूर्ण कारक व्यावहारिकता एवं सामाजिक लाभ भी हैं (Dorian 2014: 207)।

इसका अर्थ स्पष्ट है कि अगर भाषा के द्वारा रोज़गार नहीं है या कोई सामाजिक लाभ नहीं है तो उस भाषा को सीखने का चाव कम हो जाता है। सिंगापुर में हिंदी सीखकर रोज़गार की कल्पना अभी रूप नहीं ले सकती और विश्व के अन्य देशों में भी हिंदी के बल पर काम नहीं मिलता। हालाँकि यूरोपीय और अन्य एशियाई भाषाओं में यह संभव है जिसकी वजह से उनके प्रति अलग दृष्टिकोण है। हालाँकि सिंगापुर में कई बार प्रेम प्रसंग के कारण यह भाषा सीखी जा रही है। आज अंतर्जातीय विवाह की प्रथा अधिक है और प्रेम जिससे हो जाए उसके लिए आज का युवा बहुत कुछ करने को तैयार रहता है। कभी-कभी भाषाई भिन्नता वाले माता-पिता हों तो ऐसी 'कोड' शब्दावली का प्रयोग करना चाहते हैं

जिसे सिर्फ़ वही समझे जिसको समझाना उनका उद्देश्य होता है और वहाँ भी हिंदी एक छोटी भूमिका निभाती है। आजकल बहुभाषावादी होना कई लोगों के लिए इसी प्रकार की सहूलियत दे रहा है।

४ हिंदी सीखने वाले छात्रों के विचार और हिंदी रुझान

जो छात्र हिंदी सीख रहे हैं जब उनसे विचार लिए गए कि आखिर उन्होंने हिंदी क्यों चुनी और यह भाषा भविष्य में कैसे काम आएगी? आँकड़ों को बार-बार विश्लेषित किया गया और कई तरीके से तुलना भी की गई (Silverman 2001)। उनके उत्तरों में कुछ भिन्नता देखने को मिली। ये विचार पहले स्तर पर हिंदी सीख रहे छात्रों से लिए गए हैं। छात्रों ने विचार अंग्रेज़ी में दिए जिसका हिंदी अनुवाद किया गया है। छात्रों के विचार प्रश्नावली के साथ ही, बड़े वाक्यों और बातचीत के अलग रूप में थे। अत: उसका बारीकी से विश्लेषण किया गया (Creswell 2002)। यह नमूना चालीस छात्रों के विचारों पर आधारित है। नमूने का आकार बहुत बड़ा नहीं है पर जो निष्कर्ष निकले हैं, उनका काफी हद तक व्यापक स्तर पर इस्तेमाल किए जा सकते हैं । उनके उत्तरों में भिन्नता है और काफी विस्तृत क्षेत्र को दिखाता है।

५ हिंदी सीखने के कारण

छात्रों से पूछे गए प्रश्न—“आप हिंदी क्यों सीख रहे हैं?” और “यह भाषा भविष्य में कैसे काम आएगी?”—के संबंध में जो विचार आए, उनका विश्लेषण किया गया तो कुछ पहलू बार-बार दिखे पर कुछ नई बातें भी दिखीं। कुछ आम चीज़ें हर भाषा के सीखने के पीछे कारण होती हैं। कुछ बातें हर भाषा के सम्बन्ध में बदल जाती हैं। ज़्यादातर छात्रों ने एक से अधिक कारण दिए, जिनकी वजह से वे हिंदी के प्रति खिंचे हुए हैं।

५.१ बॉलीवुड

हिंदी भाषा सीखने के आम कारणों में सबसे अधिक छात्रों ने फ़िल्मी प्रेम ज़ाहिर किया। लगभग ६० प्रतिशत छात्र भारत की फ़िल्मी हस्तियों और फ़िल्मी दुनिया से इस क़दर प्रभावित हैं कि भाषा सीखना चाहते हैं। हिंदी फ़िल्में और गीत भी बहुत आकर्षित करते हैं। बॉलीवुड ने हिंदी भाषा के प्रति एक सकारात्मक रवैये का विस्तार किया है। फ़िल्मी संवाद समझना, गीतों के बोल समझना फ़िल्म देखने को अधिक दिलचस्प बनाता है। ‘सबटाइटल’ कई बार अर्थ का भाव और उसकी गहराई नहीं दे पाते इसलिए छात्र थोड़ी सी हिंदी ही सही पर सीखना चाहते हैं। यहाँ सिर्फ़ दो-तीन उदाहरण दिए जा रहे हैं पर लगभग सभी ने इसी तरह की बात कही है।

> *“हिंदी फ़िल्में देखने की शुरुआत बहुत पहले हुई और मैं तब से ही हिंदी सीखना चाहता था क्योंकि मुझे गीतों में बहुत अधिक दिलचस्पी है। और एक दिन उत्तर भारत ज़रूर जाना होगा तो यह भाषा मेरी मदद करेगी।”*

> *“मुझे हिंदी फ़िल्में देखना और गाने सुनना बहुत अच्छा लगता है।”*

"हिंदी फ़िल्में बचपन से देख रहा हूँ तो जब मौक़ा मिला तो लगा हिंदी सीखनी चाहिए। हिंदी सुनने में बहुत अच्छी लगती है जैसे 'फ़राज़' फिल्म में जो कविता है, अब मैं कुछ समझ सकता हूँ तो मुझे बहुत अच्छा लगता है।"

बॉलीवुड के प्रति आकर्षण भारतीय और मलय पृष्ठभूमि वाले छात्रों में ही दिखी। हाँ दो-तीन ऐसे छात्र भी मिले जो चीनी हैं लेकिन बॉलीवुड से प्रेरित और आकर्षित हैं। उनमें से एक छात्र कुछ वर्षों तक पिताजी की नौकरी के कारण कोलकाता में रह चुका है। भारतीय परिवेश में रहने के कारण उसे हिंदी, बांग्ला और उड़िया के प्रति भी लगाव है। उसने हिंदी कभी सीखी नहीं इसलिए अब सीख रहा है पर हिंदी फ़िल्में देखी हैं और गाने सुनता है। भारतीय संस्कृति से भी वह बहुत अधिक प्रभावित है जिसका प्रमाण उसके नाम में दिखता है। वह चीन से है पर उसने अपना उपनाम अर्जुन रखा है और हिंदी कक्षा में सब उसे अर्जुन ही पुकारते हैं। दूसरी चीनी छात्रा को अलग-अलग संगीत पसंद है। वह कई भाषाओं के गीत सुनती है और इस तरह उसे बॉलीवुड से प्रेम है।

५.२ नई भाषा सीखना

आजकल नई भाषा सीखने का चलन अधिक है। ऐसा नहीं है कि पहले नहीं था पर तब अवसर कम थे तो जो लोग वाकई भाषा-संस्कृति से प्रेरित होते थे, ज़्यादातर वही सीखते थे। कई बार उस भाषा में वे महारत भी हासिल करते थे। आज अवसर अधिक हैं। छात्र आसानी से विश्वविद्यालयों में नई भाषा विशेषज्ञों से सीख सकते हैं। लिए गए विचारों में से कई लोग सिर्फ़ एक नई भाषा सीखने की वजह से हिंदी सीख रहे हैं। हाँ उन्हें देवनागरी लिपि ने अवश्य सम्मोहित किया है।

"नई भाषा सीखने से 'कौग्निटिव स्किल्स' बेहतर होता है तो मैं नई लिपि वाली भाषा सीखना चाहता था ताकि हिंदी लिपि भी पढ़ सकूँ और कौशल भी बढ़ा सकूँ।"

"चीनी भाषा से यह बहुत अलग है इसलिए मेरे लिए सीखना बहुत दिलचस्प है।"

५.३ भारत भ्रमण और भारत को जानना

भारत घूमना और लोगों से बातचीत करना भी हिंदी भाषा सीखने वाले छात्रों के बीच काफी लोकप्रिय जवाब रहा। भ्रमण और भाषा का काफी पुराना संबंध रहा है। भ्रमण के दौरान भाषा की अनिवार्यता से सभी सहमत हैं और लोगों ने किसी भी नए देश की सैर से पहले उस देश की भाषा में कुछ वाक्य सीखने की सलाह दी है। आज दुनिया अधिक छोटी हो गई है और ज़्यादा से ज़्यादा लोग दूसरे देशों की सैर करना चाहते हैं। हालाँकि भारत जितना सुन्दर और विविधता भरा है, वह अपना उतना प्रचार नहीं कर पाया है। आज भी भ्रमण के लिए लोगों की पसंद में भारत पहले स्थान पर नहीं आता। भारत भ्रमण के आकर्षण के कुछ ख़ास कारण ही ज़्यादातर दिखाई देते हैं जिनमें संस्कृति मुख्य है। धीरे-धीरे अब यह क्षितिज भी व्यापक हो रहा है और भारत भ्रमण के कारणों में

कुछ भिन्नता भी दिखने लगी है। यहाँ चीनी छात्रों में भी भारत भ्रमण का रुझान दिखा। भारतीय मूल के छात्रों में भी उत्तर भारत देखने की चाह स्पष्ट दिखी और इन्हीं कारणों से वे हिंदी कक्षा में उपस्थित हैं।

> *"मैं एक दिन भारत घूमना चाहता हूँ। हिंदी सीखने से वहाँ के लोगों की बात शायद कुछ-कुछ समझ पाऊँ और सबसे ज़रूरी है इससे मुझे भारतीय संस्कृति का भी ज्ञान मिल रहा है।"*

> *"हिंदी सीखने से मैं लोगों से बातचीत कर पाऊँगी। हिंदी भारत में सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषा है और सिंगापुर में भी काफ़ी लोग बोलते हैं। मेरी हिंदी गीतों में बहुत रुचि है"।*

५.४ भारतीय संस्कृति और देवनागरी लिपि

भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षण प्राचीन समय से ही पश्चिम के लोगों में काफी रहा है। वाराणसी के घाटों पर विदेशियों की भीड़, कहीं किसी गली में रहकर संस्कृत और हिंदी सीखते लोगों के बारे में काफी कुछ लिखा जा चुका है। भारतीय संस्कृति में जितनी भिन्नता है उतनी शायद ही किसी और संस्कृति में हो। भारतीय संस्कृति के नज़दीक आने के लिए छात्र अन्य भारतीय भाषाओं के बजाय हिंदी चुनते हैं। उन्हें यह अहसास है कि हिंदी भाषा ही भारत की संस्कृति को समझने में काम आएगी। धर्म सिंगापुर में छात्रों को अधिक प्रभावित नहीं करता पर संस्कृति के कई पक्ष बहुत अधिक प्रभावित करते हैं। संस्कृति जानने की अधिक चाह चीनी और कुछ अहिंदी भाषी भारतीय छात्रों में दिखी। मलय छात्र संस्कृति से कुछ कम प्रभावित दिखे। संस्कृति के साथ ही देवनागरी लिपि भी आकर्षण का एक पहलू है। हालाँकि कई लोग लिपि के चलते हिंदी कक्षा की ओर देखते भी नहीं पर अगर वे आ जाते हैं तो उनका दृष्टिकोण भी बदलता दिखा है। देवनागरी लिपि आसानी से सीखी जा सकती है और जब छात्र लिपि सीख लेते हैं तो एक अलग उपलब्धि का अहसास होता है। पहले स्तर की कक्षाओं में शुरू के कुछ हफ़्तों में दोनों ही विश्वविद्यालयों में लिपि सिखा दी जाती है। छात्र 'ट्रान्सलिटरेशन' यानी रोमन लिपि के द्वारा सही उच्चारण करने की विधि का इस्तेमाल कर सकते हैं पर देखा गया है जब उन्हें देवनागरी लिपि समझ आ जाती है तो वे भाषा के प्रति अधिक उत्साहित नज़र आते हैं। वे लिपि का अधिक से अधिक इस्तेमाल करना भी चाहते हैं। हाँ जब कक्षा में 'एक्टिविटी' के लिए कुछ जल्दी में लिखना होता है तो वे कई बार 'ट्रांसलिटरेशन' का इस्तेमाल करते हैं।

> *"भारतीय संस्कति में 'रिचनेस' है मैं उसके बारे जानना चाहती हूँ।"*

> *"भारत की संस्कृति और संगीत मुझे बहुत आकर्षित करते हैं।"*

> *"भारतीय उपमहाद्वीप की कविताएँ मुझे बहुत आकर्षित करती हैं। अंग्रेज़ी में पढ़कर मज़ा थोड़ा कम होता है इसलिए हिंदी सीख रहा हूँ। मेरी भारतीय इतिहास और राजनीति में भी बहुत रुचि है।"*

> *"मैं हिंदी सीख रहा हूँ क्योंकि इसकी लिपि बहुत सुंदर है और मैं संस्कृति को समझना चाहता था।"*

जहाँ एक ओर छात्रों ने भाषा सीखने में लिपि को रुकावट की तरह सोचा वहीं लिपि के कारण भाषा सीखने की बात लगभग २० प्रतिशत छात्रों ने की जो यह दिखाता है अलग लिपियाँ कई बार अधिक आकर्षित करती हैं। संस्कृति के प्रति खिंचाव उसकी भिन्नता और विविधता के कारण है। साथ ही सिंगापुर में हाल के कुछ वर्षों में उत्तर भारतीय संस्कृति काफी ज़ोर पकड़ रही है और लोगों को आकर्षित कर रही है। होली का त्योहार एक अच्छा उदाहरण है। आज सिंगापुर में कई जगहों पर होली का बड़ा आयोजन किया जाता है जिसमें चीनी, अमेरिकी, यूरोपीय, अन्य कई देशों के लोग, अहिंदी भाषी भारतीयों के साथ ही कुछ मलय छात्र भी नज़र आते हैं। इस तरह से संस्कृति का एक पहलू भाषा से जुड़ जाता है और हिंदी और संस्कृति के बारे में कुछ बातें तो अवश्य ही पता चलती हैं।

५.५ दोस्तों एवं रिश्तेदारों से बातचीत

दोस्तों और रिश्तेदारों से बात करना भी हिंदी सीखने के कारणों में से एक ख़ास कारण है। जैसा कि शुरू में ही हम देख चुके हैं कि सिंगापुर में हिंदी सीखने वाले छात्रों में एक बड़ा वर्ग अहिंदी भाषी भारतीयों का है। उनमें से कई छात्रों के रिश्तेदार भारत में रहते हैं और कई बैंगलुरु, मुंबई, पुणे आदि स्थानों में रहते हैं। वहाँ हिंदी बोलने का चलन है और छात्रों को लगता है कि जब वे उनसे मिलते हैं तो हिंदी न जानने के कारण कई बातें, मज़ाक, कई चीज़ों में पीछे रह जाते हैं। वे सीखकर इस बाधा को दूर करना चाहते हैं।

> *"मेरे दोस्त हिंदी भाषी है और हर समय हिंदी में बात करते हैं जब उन्हें लगता है कि यह दूसरों को न समझ आए। मैं चाहती हूँ कि हिंदी सीख लूँ तो उनकी बातें समझ पाऊँगी और उनकी संस्कृति भी अधिक समझना चाहती हूँ।"*

> *"मेरे काफ़ी रिश्तेदार भारत में रहते हैं और हिंदी बोलते हैं। मैं उनसे हिंदी में बात करना चाहती हूँ।"*

> *"अब सिंगापुर में बहुत लोग हिंदी बोलते हैं इसलिए हिंदी सीखना उपयोगी होगा।"*

दोस्तों की बातें अगर न समझ आए तो बड़ी खीझ मचती है और ऐसा यहाँ भी होता है। सिंगापुर को 'एजुकेशन हब' की संज्ञा दी जाती है। यह भारत से नज़दीक है और यहाँ के विश्वविद्यालयों की गणना बहुत अच्छे विश्वविद्यालयों में की जाती है। शायद यही कारण है कि सिंगापुर में भारत से आकर पढ़ने वालों की संख्या काफी है। वे ज़्यादातर हिंदी बोलते हैं। कई बार अपने दोस्तों की बातें, चुगली आदि समझने के लिए हिंदी सीखने आते हुए देखा गया है। दोस्ती कभी-कभी प्यार में बदल जाती है और कुछ छात्र अपने भावी जीवनसाथी, उसकी संस्कृति को और बेहतर तरीके से समझने के लिए भी हिंदी सीखते हैं।

५.६ भारत की अर्थव्यवस्था और रोज़गार के अवसर

भारत की अर्थव्यवस्था और रोज़गार के अवसर यह रुझान हाल के वर्षों में देखने को मिला है। चीनी छात्र भी भारत को उभरती हुई सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था के रूप में देखने लगे हैं। भारत में काम करने को लेकर आज भी बहुत उत्साह नहीं है लेकिन इस विकल्प को कोई छोड़ना भी नहीं चाहता। कंप्यूटर जैसे कोर्स पढ़ने वाले छात्र ये मानते हैं कि भविष्य में उन्हें भारतीयों के साथ भी काम करना हो, तो ऐसे में हिंदी काम आएगी। भारत का बाज़ार भी बहुत बड़ा है। रोज़गार के अवसर मिलने पर भाषा को रुकावट नहीं बनने देना चाहते। भारत पर सबकी नज़र है और सभी हिंदी को ही भारत की भाषा के रूप में देखते हैं। यह भी यथार्थ है कि भारत में अंग्रेज़ी के बल पर काम किया जा सकता है इसलिए हिंदी सीखने वालों की संख्या अधिक नहीं है। सबको यह मालूम है कि हिंदी की ज़रूरत काम के लिए भले न हो पर बाज़ार और वहाँ लोगों एवं संस्कृति को समझना भी आवश्यक है इसलिए हिंदी सीखने की कोशिश की जा रही है।

> *"भारत में काम करना भी एक विकल्प है तो हिंदी भाषा उसके लिए ज़रूरी है।"*

> *"आज अगर देखा जाए तो भारत को विश्व की सबसे शक्तिशाली और तेज़ी से आगे बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था के रूप में देखा जा रहा है। और भारत में काम के बहुत मौक़े बन रहे हैं इसलिए संवाद के लिए कुछ आधार होना चाहिए। भाषा पूरी न भी आए तो कम से कम संस्कृति की बेहतर समझ हो ताकि भारतीयों के साथ अच्छे कामकाजी संबंध बन सकें।"*

> *"चीन के बाद भारत की अर्थव्यवस्था काफ़ी तेज़ी से बढ़ रही है इसलिए हिंदी सीखना बहुत उपयोगी होगा।"*

> *"मैं कंप्यूटर साइंस का छात्र हूँ और भारत के लोग भी इसमें बहुत अच्छे होते हैं। अब भारत में काम के अवसर भी बढ़ रहे हैं तो शायद एक दिन मुझे भी किसी भारतीय के साथ काम करना हो। और ऐसे में हिंदी काम आएगी।"*

६ हिंदी अध्यापन सामग्री

हिंदी सीखने के क्या-क्या मुख्य आकर्षण हैं इन पर चर्चा करने के बाद एक और बात सामने आती है और वह है हिंदी अध्यापन में प्रयुक्त सामग्री और उनका प्रभाव। हालाँकि यह विषय काफी विस्तृत है और इस पर पूरे एक शोध पत्र की आवश्यकता है इसलिए यहाँ बहुत ही संक्षेप में अध्यापन की बात की जायेगी। क्या अध्यापन सामग्री का प्रभाव भी छात्रों की संख्या और रुझान पर पड़ता है? अध्यापन के लिए सिर्फ एक ही विश्वविद्यालय के आँकड़ों का अभी इस्तेमाल किया जा रहा है। इसके लिए छात्रों की टिप्पणी का प्रयोग किया गया है। अगर संक्षेप में कहा जाए तो छात्र भाषा के साथ ही संस्कृति के प्रति अधिक उत्साहित दिखते हैं। उनके लिए सिर्फ़ किताबों का इस्तेमाल पर्याप्त नहीं होता। वे उस भाषा के समाज को असली रूप में देखना चाहते हैं। जैसे अन्य सभी देशों में होता है वैसे ही सिंगापुर में भी कुछ निर्धारित पुस्तकें हैं और उनके अलावा मीडिया और तकनीकी

का भरपूर प्रयोग होता है। ऐसा देखा गया है कि जब छात्र 'मॉडूल' के बारे में लिखते हैं तो वे उन्हीं बातों को याद रखते हैं जो उन्हें भाषा के असली रूप से परिचित करवाती हैं। अगर कोई ख़ास वीडियो या गीत देखा हो और उससे भाषा-संस्कृति के बारे में कुछ सीखा हो तो वह ज़्यादा प्रभावी होता है। यूरोपीय या अन्य कई भाषाओं में शिक्षण सामग्री बेहतर रूप में विकसित है और हिंदी में अवश्य इसका अभाव दिखाई देता है पर सामग्री के कारण हिंदी भाषा सीखने आना या न आना अभी बहुत स्पष्ट नहीं है और इस पर शोध जारी है। इसका कारण यह भी है कि सिंगापुर में भिन्न तरह की सामग्री हिंदी सिखाने के लिए प्रयोग की जाती है। भाषा शिक्षण सामग्री में ऑडियो-वीडियो रिकार्डिंग ख़ास तैयार किये जाते हैं। पॉडकास्ट, वेबकास्ट आदि का इस्तेमाल सीखने की प्रक्रिया को रोचक बनाता है साथ ही कई तरह के 'एक्टिविटी' कार्ड्स ख़ास ज़रूरत के हिसाब से तैयार किये गए हैं जिन्हें समय-समय पर बदला जाता है। विश्वविद्यालयों के 'ऑनलाइन पोर्टल' का इस्तेमाल करके आजकल की पीढ़ी को 'मोबाइल लर्निंग' की सहूलियत भी दी जा रही है। ऐसी कई सामग्रियों के प्रयोग से अवश्य ही सीखने-सिखाने की प्रक्रिया अधिक दिलचस्प बनती है जिसका ज़िक्र छात्र कई बार अपने 'फ़ीडबैक' में करते हैं।

७ निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि यह पूरा शोध छात्रों के अनुपात और रुझान स्पष्ट कर देता है। हिंदी कक्षा में आखिर अहिंदी भाषी भारतीय छात्र अधिक क्यों हैं और चीनी छात्रों की संख्या कम क्यों है? हिंदी सीखने वाले छात्रों में अधिक संख्या भारतीय मूल के छात्रों की ही दिखाई देती है जो ज़्यादातर द्रविड़ भाषा परिवार की पृष्ठभूमि से आते हैं। अहिंदी भाषी भारतीय छात्रों का भारतीय सांस्कृतिक परिचय अधिक होता है तो कई बार इससे उन्हें भाषा सीखने में आसानी होती है। उनके बाद चीनी मूल के छात्रों की संख्या रहती है साथ ही मलय मूल के छात्र भी हिंदी सीखने के प्रति रुचि रखते हैं। चीनी और मलय मूल के छात्र चूँकि सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में एकदम भिन्न होते हैं तो हिंदी भाषा के प्रति उनके रुझान का एक कारण यह बन जाता है। वे छोटी-छोटी बातों में भी बड़ी रुचि लेते हैं। सामान्य रूप से हिंदी सीखने के लिए कुछ बातें अधिक दिखी हैं; बॉलीवुड, यात्रा-भ्रमण, संस्कृति, देवनागरी लिपि, दूसरों को समझना, प्रेम-दोस्ती, रिश्तेदारों से बातचीत, भारत की अर्थ-व्यवस्था आदि। ये मुख्य पहलू हैं जो सामने उभरकर आए हैं जिनके कारण हिंदी सीखी जा रही है। आज सीखनेवालों की संख्या भले ही कम हो पर भारत को उभरती शक्ति के रूप में देखने वाले लोगों को विश्वास है कि हिंदी सीखने वालों की संख्या तो बढ़ेगी ही साथ ही यह रुझान संस्कृति को और बेहतर तरीके से जानने में सहायक होगा।

ORCID®

Sandhya Singh https://orcid.org/0000-0002-1723-0924

संदर्भ-सूची

Creswell, John W. 2012 [2001]. *Educational Research: Planning, Conducting, and Evaluating Quantitative and Qualitative Research*. 4th ed. Boston, MA: Pearson.

Dorian, Nancy C. 2014 [1982]. "Language Loss and Maintenance in Language Contact Situations", in: Dorian, Nancy. *Small Language Fates and Prospects: Lessons of Persistence and Change from Endangered Languages. Collected Essays*. (Brill's Studies in Language, Cognition and Culture 6.) Leiden; Boston 2014, 203–222.

Chew, Ernest C. T. & Edwin Lee (eds) 1991. *A History of Singapore*. Singapore: Oxford University Press.

Romaine, Suzanne 1989. *Bilingualism*. (Language in Society 13.) Oxford (et al.): Basil Blackwell.

Silverman, David 2001. *Interpreting Qualitative Data: Methods for Analysing Talk, Text, and Interaction*. 2nd edn. London; Thousand Oaks, California: Sage Publications.

Stathopoulou, Maria 2015. *Cross-language Mediation in Foreign Language Teaching and Testing*. Bristol: Multilingual Matters.

Department of Statistics, Singapore 2018. *Population Trends 2018*. Singapore: Department of Statistics. (<https://www.singstat.gov.sg/>, accessed: October 18, 2019).